17 जुलाई 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शिलान्यास महोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित जैनबालिका संस्कार संस्थान के संचालन हेतु 'संस्कार तीर्थ शाश्वत धाम' नामक संकुल की स्थापना की जा रही है, अत: दिनांक 28 व 29 जून को रत्नत्रय विधान व 9 भव्य भवनों के शिलान्यास संपन्न हुये।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 29 जून को कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री निहालचंदजी जैन जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री लक्ष्मीचंद गांधी सोनासण, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री चन्द्रभानजी जैन, श्री विनोदकुमारजी डेवडिया, श्री प्रमोदकुमारजी मस्ताईं सिद्धायतन, डॉ. महेशजी जैन भोपाल, श्री कान्तिलालजी बड़जात्या रतलाम उपस्थित थे। साथ ही विद्वानों में पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचंदजी कोटा, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण जैन बालिका संस्कार संस्थान की बालिकाओं द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित अंकुरजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

आगामी कार्यक्रम...

तत्त्वार्थमणिप्रदीप पर विशेष कक्षा

तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखी गई टीका तत्त्वार्थमणिप्रदीप पर देवलाली में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा 25 जुलाई से 20 अगस्त तक विशेष कक्षा का आयोजन होने जा रहा है। इसमें लाभ लेने हेतु देवलाली पधारने का आमंत्रण है। आने वाले महानुभावों को नि:शुल्क आवास एवं सशुल्क भोजन की सुविधा रहेगी। अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य दें।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. दिनांक 5 जून को विश्वास नगर-दिल्ली के मंदिर में गुणस्थान विषय पर चर्चा चली, जिसके परिणामस्वरूप सभी साधर्मियों ने भविष्य में भी गुणस्थान विषय पढाने हेतु आग्रहपूर्वक निमंत्रित किया।

2. ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 6 से 10 जून तक प्रतिदिन दोनों समय गुणस्थान विषय पर कक्षाओं का आयोजन किया गया, साथ ही शंका समाधान भी हुये।

3. दिनांक 12 जून को कोहेफिजा-भोपाल के दिगम्बर जैन मंदिर में एक प्रवचन हुआ और सायंकाल ललवानी प्रेस रोड स्थित स्वाध्याय भवन में एक प्रवचन हुआ।

4. बेलगांव (कर्ना.) : यहाँ शहापुर हुलबत्ते कोंलनी के शुद्धात्मसदन में दिनांक 13 से 18 जून तक मुमुक्षु मण्डल में प्रथम गुणस्थान से लेकर छठवें गुणस्थान पर्यंत विषय पर कक्षाओं का आयोजन हुआ।

5. दिनांक 19 जून की रात्रि में सांगली (महा.) मुमुक्षु मण्डल में कर्म विषय पर प्रवचन हुआ।

6. दिनांक 20 जून को दोपहर में आपकी जन्मभूमि नांद्रे-सांगली (महा.) में कर्म विषय पर प्रवचन एवं शंका समाधान हुये तथा ग्रामवासियों ने आपका भावभीना सत्कार किया। प्रवचन और सत्कार-समारोह का आयोजन ब्र. सुलोचना पाटील तथा ब्र. यशपालजी के बालसखा श्रीधर पाटील के ज्येष्ठ पुत्र प्रकाश पाटील ने किया। समाज में विशेष उत्साह एवं आनन्द था। सांगली में रात्रि को सर्वोदय समिति की मीटिंग हुई, जिसमें सांगली-कोल्हापुर विभाग में तत्त्वप्रचार के कार्य की प्रेरणा दी।

7. मलाड (वे.)-मुम्बई : यहाँ एवरशाइन नगर के दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 22 से 29 जून तक प्रथम से छठवें गुणस्थान पर्यंत विषय पर प्रवचन हुये। इससे प्रभावित होकर साधर्मियों ने पुन: आने का निमंत्रण दिया।

- महावीर पाटील, सांगली

अपने नगर में अगर आप अकेले ही आत्मार्थी होंगे तो आप तत्त्वचर्चा किसके साथ करेंगे ?

आइये ! अधिक से अधिक लोगों को आत्मकल्याण के मार्ग पर लगाइये।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित ''आवो मारी साथे'' योजना को क्रियान्वित कीजिये। **- महामंत्री**

सम्पादकीय –

राग–द्वेष की जड़ : पर कर्तृत्व की मान्यता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जो अन्य के सुख दुःख का, कर्त्ता स्वयं को मानते।
वे वस्तु के स्वातंत्र्य के, सिद्धान्त को नहीं जानते।।
पोषण किया करते निरन्तर, क्रोध–मान कषाय का।
शोषण सदा होता रहा, सुख–शान्ति सहज स्वभाव का।।

महावीर जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए विराग ने अपना वक्तव्य अपने अनुभूत उदाहरण से प्रारंभ किया। उसने कहा – ''देखो, हम सबने खासकर माँ ने पिताजी की बीमारी को ठीक करने के लिए क्या–क्या प्रयत्न नहीं किए, पर क्या कर पाये हम? एलोपेथी, होम्योपेथी, नेचरोपेथी आदि सभी पेथियाँ छान मारी। आयुर्वेद, यूनानी, मालिस, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, आसन, प्राणायाम आदि कुछ भी तो नहीं छोड़ा। सभी को आजमा–आजमा कर देखा; पर कहीं कोई सफलता नहीं मिली।

अन्त में वस्तु स्वातंत्र्य के सहारे और क्रमबद्धपर्याय के आलम्बन से अपनी आकुलता को कम करते हुए आर्तध्यान–रौद्रध्यान से बचने के लिए चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन, पंचपरमेष्ठियों का स्मरण और वैराग्यवर्द्धक वैराग्य भावना एवं बारह भावनाओं को हम भी पढ़ते रहे और कैसिटों के माध्यम से पिताजी को भी सुनाते रहे।

पिताजी भी शेष जीवन में समाधि की साधना करते हुए कैसिटों के साथ स्वयं भी उन्हीं पाठों को गुन–गुनाते रहे। जब स्वस्थ होने का काल पका तो बाह्य निमित्त तीर्थंकर स्तवन और अंतरंग निमित्त रूप असाता कर्म प्रकृति साता में पलट गईं। उसी समय अन्तर्मुखी उग्र पुरुषार्थ के साथ भली होनहार से ऐसा बनाव बना कि – कल महावीर जयन्ती महोत्सव की मंगल बेला में उनका गला खुल गया। उनके कंठ से संगीतमय गाथाओं एवं स्तवन के स्वर स्पष्ट सुनाई देने लगे। पास जाकर देखा तो वे महावीराष्टक बोल रहे थे, तीर्थंकर स्तवन कर रहे थे।

पिताजी की इस घटना से सिद्ध होता है कि – किसी के करने से कुछ नहीं होता। जगत का सारा परिणमन स्वयं अपने–अपने पाँच समवायों से एवं स्वयं के स्वतंत्र षट्कारकों से होता है।

अफसोस यह कि सामान्यजन तो स्वयं को दूसरों के सुख–दुःख का कर्ता और दूसरों को अपने सुख–दुःख का कर्ता मानकर दूसरों पर राग–द्वेष करके हर्ष–विषाद करते ही हैं, स्वयं को धर्मात्मा और ज्ञानी मानने वाले भी इस पर के कर्तृत्व की मान्यता में ही उलझे रहकर राग–द्वेष से नहीं उबर पाते। इसका मूल कारण निमित्त–नैमित्तिक संबंधों की घनिष्ठता है।

इस कर्त्ता–कर्म सम्बन्ध की भूल को निकालने के लिए समयसार परमागम का पूरा कर्ता–कर्म अधिकार और सर्वविशुद्ध अधिकार समर्पित है – जिसको आगम और युक्तियों के आधार से परद्रव्य के अकर्तृत्व की सशक्त चर्चा के बाद यदि हम दैनिक जीवन में २४ घंटे घटित होती घटनाओं का भी सूक्ष्म अवलोकन करें तो प्रायोगिक रूप से भी यही सिद्ध होगा कि कोई भी एक द्रव्य किसी अन्य द्रव्य का कर्ता–हर्ता नहीं हो सकता; क्योंकि विश्व की सम्पूर्णसृष्टि आटोमेटिक स्व–संचालित है।''

मुख्य वक्ता के रूप में अपने विषय का प्रतिपादन करते हुए विराग ने अपने व्याख्यान में आगे कहा – ''समयसार के कर्त्ता–कर्म अधिकार में वस्तुस्वातन्त्र्य या छहों द्रव्यों के स्वतंत्र परिणमन का निरूपण प्रकारान्तर से परद्रव्य के अकर्तृत्व का ही निरूपण है। यह अकर्तावाद का सिद्धान्त आगमसम्मत युक्तियों द्वारा एवं सिद्धान्तशास्त्रों की पारिभाषिक शब्दावलियों द्वारा तो स्थापित है ही, साथ ही अपने व्यावहारिक लौकिक जीवन को निराकुल सुखमय बनाने में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

आगम के दबाव और युक्तियों की मार से सिद्धान्ततः अकर्तृत्व को स्वीकार कर लेने पर भी अपने दैनिक जीवन की छोटी–मोटी पारिवारिक घटनाओं के सन्दर्भ में उन सिद्धान्तों के प्रयोगों द्वारा आत्मिक शान्ति और निष्कषाय भाव रखने की बात जगत के गले आसानी से नहीं उतरती, उसके अन्तर्मन को सहज स्वीकृत नहीं होती; जबकि हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की सच्ची प्रयोगशाला तो हमारे जीवन का कार्यक्षेत्र ही है।

क्या अकर्तावाद जैसे संजीवनी सिद्धान्त केवल शास्त्रों की शोभा बढ़ाने या बौद्धिक व्यायाम करने के लिए ही हैं? अपने व्यवहारिक जीवन में प्रामाणिकता, नैतिकता, निराकुलता एवं पवित्रता प्राप्त करने में इनकी कुछ भी भूमिका–उपयोगिता नहीं है? यह एक अहं प्रश्न है।

जरा सोचो तो सही, अकर्तृत्व के सिद्धान्त के आधार पर जब हमारी श्रद्धा ऐसी हो जाती है कि **'कोई भी जीव किसी अन्य जीव का भला या बुरा कुछ भी नहीं कर सकता'**, तो फिर हमारे मन

में अकारण ही किसी के प्रति राग–द्वेष–मोहभाव क्यों होंगे ?

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि – अकर्तृत्व की सच्ची श्रद्धा वाले ज्ञानियों के भी क्रोधादि भाव एवं इष्टानिष्ट की भावना प्रत्यक्ष देखी जाती है तथा उनके मन में दूसरों का भला–बुरा या बिगाड़–सुधार करने की भावना भी देखी जाती है – इसका क्या कारण है?

समाधान सरल है, यद्यपि सम्यग्दृष्टि की श्रद्धा सिद्धों जैसी पूर्ण निर्मल होती है, तथापि वह चारित्रमोह कर्मोदय के निमित्त से एवं स्वयं के पुरुषार्थ की कमी के कारण दूसरों पर कषाय करता हुआ भी देखा जा सकता है; पर सम्यग्दृष्टि उसे अपनी कमजोरी मानता है। उस समय भी उसकी श्रद्धा में तो यही भाव है कि – 'पर ने मेरा कुछ भी बिगाड़–सुधार नहीं किया है।' अतः उसे उसमें अनन्त राग–द्वेष नहीं होता। उत्पन्न हुई कषाय को यथाशक्ति कृश करने का पुरुषार्थ भी अन्तरात्मा में निरन्तर चालू रहता है। अतः इस अकर्तावाद के सिद्धान्त को धर्म का मूल आधार या धर्म का प्राण भी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वस्तुतः पर में अकर्तृत्व की यथार्थ श्रद्धा रखने वाले का तो जीवन ही बदल जाता है। वह अन्दर ही अन्दर कितना सुखी, शान्त, निरभिमानी, निर्लोभी और निराकुल हो जाता है, अज्ञानी तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

समयसार के अकर्तावाद का तात्पर्य यह है कि – जो प्राणी अपने को अनादि से परद्रव्य का कर्त्ता मानकर राग–द्वेष–मोह भाव से कर्मबन्धन में पड़कर संसार में परिभ्रमण कर रहा है, वह अपनी इस मूल भूल को सुधारे और अकर्तृत्व की श्रद्धा के बल से राग–द्वेष का अभाव कर वीतरागता प्रगट करे; क्योंकि वीतराग हुए बिना पूर्णता, पवित्रता व सर्वज्ञता की प्राप्ति संभव नहीं है। एतदर्थ अकर्तावाद को समझना अति आवश्यक है।

वस्तुतः कर्ता–कर्म सम्बन्ध दो द्रव्यों में होता ही नहीं, एक ही द्रव्य में होता है। इस विषय में आचार्य अमृतचन्द्र का निम्नांकित पद्य द्रष्टव्य है –

''यः परिणमति स कर्ता, यः परिणामों भवेतु तत्कर्म।
या परिणमति क्रिया सा, त्रयमपि भिन्नं न वस्तुतया ।।५१ ।।

जो परिणमित होता है, वह कर्ता है, जो परिणाम होता है उसे कर्म कहते हैं और जो परिणति है वह क्रिया कहलाती है, वास्तव में तीनों भिन्न नहीं है।

इस कलश से स्पष्ट है कि जीव और पुद्गल में कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है। वस्तुतः कर्तृ–कर्म सम्बन्ध वहीं होता है, जहाँ व्याप्य–व्यापक भाव या उपादान–उपादेय भाव होता है। जो वस्तु कार्यरूप परिणत होती है वह व्यापक है, उपादान है तथा जो कार्य होता है वह व्याप्य है, उपादेय है।

यदि आत्मा परद्रव्यों को करे तो नियम से वह उनके साथ तन्मय हो जाये, पर तन्मय नहीं होता, इसलिए वह उनका कर्ता नहीं है, वीतरागता प्राप्त करने के लिए अकेला अकर्ता होना ही जरूरी नहीं है; बल्कि अपने को पर का अकर्ता जानना, मानना और तद्रूप आचरण करना भी जरूरी है। एक–दूसरे के अकर्ता तो सब हैं ही, पर भूल से अपने को पर का कर्ता मान रखा है, इस कारण अज्ञानी की अनन्त आकुलता और क्रोधादि कषायें कम नहीं होतीं। अन्यथा इस अकर्तृत्व सिद्धान्त की श्रद्धा वाले व्यक्ति के विकल्पों का तो स्वरूप ही कुछ इस प्रकार का होता है कि उसे समय–समय पर प्रतिकूल परिस्थितिजन्य अपनी आकुलता कम करने के लिए वस्तु के स्वतंत्र परिणमन पर एवं उस परिणमन में अपनी अकिंचित्करता के स्वरूप के आधार पर ऐसे विचार आते हैं कि जिनसे उसकी आकुलता सहज ही कम हो जाती है। उदाहरणार्थ, वह सोचता है कि –

(अ) यदि मैं अपने शरीर को अपनी इच्छानुसार परिणमा सकता तो जब भी अपशकुन की प्रतीक मेरी बाईं आँख फड़कती है, उसे तुरन्त बन्द करके शुभ शकुन की प्रतीक दायी आँख क्यों नहीं फड़का लेता? **(क्रमशः)**

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

(1) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की स्नातक **कु.परिणति पाटील** सुपुत्री पण्डित शान्तिकुमार पाटील, जयपुर ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आचार्य (जैनदर्शन) परीक्षा–2013 की वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त **पण्डित संजयकुमारजी शाह** सुपुत्र श्री बादामीलालजी शाह ने आचार्य (प्राकृत जैनागम) परीक्षा–2013 की वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(2) टोडरमल महाविद्यालय के छात्र मयंक ठगन (शास्त्री तृतीयवर्ष) ने **प्राचीन धर्म : जैनधर्म** विषय पर इन्दौर में हुये सेमिनार में अपने विषय **क्या जैनधर्म हिन्दूधर्म की शाखा है ?** पर वक्तव्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसमें पुरस्कार राशि के रूप में 15 हजार रु की राशि प्रदान की जायेगी। इस सेमिनार में 501 वक्ताओं ने भाग लिया था।

इस उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन क्या–क्यों और कैसे ? शृंखला की दूसरी कड़ी –
श्रावक के षट् आवश्यकों का पालन करते हुये

आत्मकल्याणकारी परिपूर्ण जीवन जियें, भवभ्रमण बढाने वाला आधा-अधूरा जीवन नहीं

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल
(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

जिनागम में श्रावक के षट्आवश्यक कहे गये हैं –

देवपूजा गुरोपास्ति, स्वाध्याय: संयमस्तप:।
दानश्चेति गृहस्थाणां, षट् कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् **देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये ज्ञानी के षट् आवश्यक हैं** अर्थात् प्रतिदिन करने योग्य कार्य हैं।

आश्चर्य का विषय है कि इनमें पेटपूजा और धनोपास्ति का नाम तो है ही नहीं और हम हैं कि बस जीवनभर इन्हीं दोनों कार्यों में व्यस्त रहते हैं और षट् आवश्यकों के नाम भी हमें मालूम नहीं है, हमारे जीवन में उनका तो कोई स्थान ही नहीं है।

जीवन की सार्थकता तो इसी में है कि वह उक्त षट् आवश्यकों के पालनपूर्वक व्यतीत हो, हमारे जीवनक्रम में मात्र उक्त छह क्रियाओं की ही प्रधानता हो और गौण रूप से न्याय–नीति और नियमों के पालनपूर्वक आजीविका तो होगी ही, पर जीवन के प्रति हमारे सुविचारित, सम्पूर्ण और स्पष्ट दृष्टिकोण के अभाव में हमारा जीवन नदिया के तेज बहाव में एक तिनके के समान बहते हुए व्यतीत हो जाता है, बिना किसी निष्कर्ष के अर्थहीन और व्यर्थ।

हममे से अधिकतम लोग कमाने की धुन में अपना जीवन झोंक डालते हैं तो कुछ लोग भोगों की दौड़ में, कुछ अभागे ऐसे भी हैं जो जीवनभर मात्र पेट भरने और तन ढकने के जोड़तोड़ में ही लगे रहते हैं।

क्या मात्र भोजन ही जीवन है, क्या सिर्फ भोग ही जीवन है, क्या बस धन ही जीवन है ?

क्या जीवन में इनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं ?

तब क्यों हम बस इन्हीं में व्यस्त रहते हैं, अस्त–व्यस्त, दिन–रात।

भोजन और वस्त्र इस जीवन की मात्र सीमित आवश्यकतायें हैं, छोटी सी; और धन ? थोड़ा सा धन जरूरी है मात्र इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये, बस।

मुझे भरोसा है कि आप भी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि सीमित भोजन और वस्त्र के लिये सीमित धन का अर्जन अत्यंत सीमित समय में सीमित श्रम से किया जा सकता है और वह भी न्याय–नीति और नियम के पालनपूर्वक। इसके बाद शेष रहा समय अपने और परिवार के मनोरंजन के लिये, समाज और देश के प्रति अपने कर्तव्य पालन के लिये और सबसे बढकर सबसे अधिक समय का उपयोग हमारे अपने आत्मकल्याण के लिये होना चाहिए क्योंकि और सभी क्रियाकलाप तो मात्र तात्कालिक महत्व के होते हैं पर आत्मकल्याण एक त्रैकालिक महत्व का कार्य है।

यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है वह पेट–पोषण जो मात्र कुछ घंटों के लिये हमें निश्चिन्त करता है उसकी चिंता और व्यवस्था में तो हम जीवनभर व्यस्त रहते हैं, प्रतिदिन–प्रतिपल और वह आत्मचिंतन जो हमें अनन्तकाल के लिये निश्चिन्त कर सकता है, उसके लिये हमारे पास पलभर का भी समय नहीं; उसके लिये हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं।

पशुओं के साथ अपनी तुलना हमें अच्छी तो नहीं लगती है पर जरा विचार तो करें कि आत्मकल्याण के लिये आत्मचिंतन और स्वाध्याय के अभाव में हमारा जीवन किस प्रकार पशुओं की अपेक्षा विशिष्ट कहा जा सकता है ? आखिर तो वे भी अपने लिये भोजन जुटा ही लेते हैं और अपने तरीके से अपना मनोरंजन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हुए एक दिन हमारी ही तरह मर जाते हैं। भूखे वे भी नहीं मरते हैं और अमर हम भी नहीं हैं।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उद्देश्य एक ऐसे आत्मार्थी समाज का निर्माण करना है जिसके सदस्य ज्ञानी श्रावक के षट् आवश्यकों का पालन करते हुए एक सम्पूर्ण और आत्म–कल्याणकारी जीवन व्यतीत करें।

आज के इस भौतिकवादी युग में, उपयुक्त उदाहरण के अभाव में प्रत्येक व्यक्ति को शायद यह कल्पना ही असंभव सी लगे कि इस युग में षट् आवश्यकों का पालन करते हुए एक सम्पूर्ण और सफल जीवन जिया भी जा सकता है; पर अपने आपको ऐसा जीवन सफलतापूर्वक जीने वाले आत्मार्थियों के बीच पाकर ऐसा कौन अभागा होगा जो स्वयं भी ऐसा ही साफ–सुथरा और सार्थक जीवन जीने से अपने आपको वंचित रखें ?

एक ऐसे ही आदर्श, सात्विक और आत्मार्थी समाज का निर्माण करके आदर्श प्रस्तुत करना ही अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का मूल उद्देश्य है।

मैं आह्वान करता हूँ कि आइये, युवा फैडरेशन से जुड़िये, एक आदर्श समाज की स्थापना में हमारा सहयोग कीजिये और अपने आपको आत्मकल्याण के मार्ग में स्थापित कर अपने जीवन को सफल कीजिये।

(क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

बाल संस्कार शिविर संपन्न

सेमरखेड़ी–विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री तारण तरण दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र निसईजी में दिनांक 4 से 11 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र.शांतानन्दजी, ब्र.मुक्तानंदजी, ब्र.सुधाबेन, पण्डित आकेशजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित अविनाशजी शास्त्री, पण्डित अक्षयजी शास्त्री, पण्डित शुभमजी शास्त्री आदि विद्वानों का सानिध्य व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 175 बालकों सहित 200 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर प्रात: चार कक्षायें व प्रवचन, दोपहर में तीन प्रवचन व चार कक्षायें एवं रात्रि में भक्ति, सामूहिक शिक्षण व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **– प्रदीप कुमार कुण्डा**

क्या आप नहीं चाहते हैं कि आपके बच्चे आपके साधर्मी भी बनें ?

यदि हाँ !

तो उन्हें वीतराग–विज्ञान पाठशाला में अवश्य भेजें। यदि आपके नगर में या गली–मौहल्ले में वीतराग–विज्ञान पाठशाला नहीं है तो उसकी स्थापना करें। **– महामंत्री**

हार्दिक बधाई !

सौ. परिणति (सुपुत्री–शान्तिकुमार पाटील, जयपुर) एवं डॉ. मोहित (सुपुत्र–डॉ. एम.एल. जैन, विदिशा) के विवाहोपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 1100/– रुपये प्राप्त हुये। हार्दिक बधाई !

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। इसके अतिरिक्त विद्वत्गण भी अपनी स्वीकृति शीघ्र ही भेजें।

– महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, फैक्स – 0141–2704127**
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 27 जुलाई से मंगलवार 5 अगस्त, 2014 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

शीघ्र आवश्यकता

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, घडियाली पोल, सुरेश्वर देसाई का खांचा, घंटीयाला, बड़ौदा (गुजरात) में पुजारीजी की आवश्यकता है। रहने की सुविधा दी जायेगी। संपर्क करें। अध्यक्ष–श्री जसवंत लाल कोटडिया, मो.09979350716, ट्रस्टी–अंकुर गांधी– 09879586085

समयसार परमागम विधान संपन्न

मुम्बई : यहाँ माटुंगा में श्री माटुंगा गुजराती सेवा मण्डल के विशाल हॉल में दिनांक 25 मई से 2 जून तक श्री समयसार परमागम मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा एवं विदुषी बासंतीबेन शाह मुम्बई का सानिध्य प्राप्त हुआ।

दिनांक 25 मई को श्री अनंतनाथ स्वामी का जन्म–तप कल्याणक, दिनांक 27 मई को शांतिनाथ स्वामी का जन्म–तप–मोक्ष कल्याणक, दिनांक 28 मई को अजितनाथ स्वामी का गर्भ कल्याणक, दिनांक 1 जून को धर्मनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याणक एवं दिनांक 2 जून को श्रुतपंचमी का कार्यक्रम बहुत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर लगभग 200–250 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि–विधान के कार्य डॉ.मुकेशजी तन्मय द्वारा किये गये।

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई–मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र भेजे गए हैं परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **– महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, फैक्स – 0141–2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

सिद्धभक्ति

24 आठवीं पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

जय सन्तनि मन आनन्दकार, जय सज्जन चित वल्लभ अपार।
जय सुरगण गावत हर्ष पाय, जय कवि यश वर्धन न करि अघाय।।८।।

हे सिद्ध भगवन् ! आप सन्तों के मन को आनन्द देनेवाले हो; अत: आपकी जय हो। आप सज्जनों के चित्त को अत्यन्त प्रिय हो, अपार वल्लभ हो; अत: आपकी जय हो। आपके गुणों का गान करके देवता लोग अत्यन्त हर्षित होते हैं; अत: आपकी जय हो और कविगण आपके यश का कथन करते हुए अघाते नहीं हैं, आपका गुणगान कितना ही क्यों न करें, पर उन्हें तृप्ति नहीं मिलती, ऐसा लगता है कि करते ही रहें। इसलिए आपकी जय हो, जय हो।

इसप्रकार हे सिद्ध भगवान ! आप सन्तों, सज्जनों, देवताओं और कविगणों के आराध्य हो, वल्लभ हो, गेय हो और श्रद्धेय हो। आप इन सबके मन में सदा बसे रहते हो।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

तुम महातीर्थ भवि तरण हेत, तुम महाधर्म उद्धार देत।
तुम महामंत्र विष विघ्न जार, अघ रोग रसायन कहो सार।।९।।

हे सिद्ध भगवन् ! आप भव्य जीवों को संसार सागर से पार होने के लिए महान तीर्थ हो; तारनेवाली, पार उतारनेवाली नौका हो; भव्यों के उद्धार के लिए महान धर्म हो; विघ्नरूपी विष को उतारने के लिए आप महामंत्र हो और पुण्य-पापरूप अघ रोग को दूर करने के लिए आप सारभूत रसायन हो, दवा हो, रामबाण औषधि हो; इसलिए आपकी जय हो, जय हो।

महातीर्थ, महाधर्म, महामंत्र, महारसायन - जगत में जो कुछ भी महान है; वह सब कुछ आप ही हो।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

तुम महाशास्त्र का मूल गेय, तुम महातत्त्व हो उपादेय।
तिहुँ लोक महामंगल सु रूप, लोकत्रय सर्वोत्तम अनूप।।१०।।

हे सिद्ध भगवन् ! आप महान शास्त्रों के मूलभूत गेय हो। तात्पर्य यह है कि सभी महान शास्त्र मूलत: आपके ही गीत गाते हैं।

दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि आप महान ज्ञेय हैं और ये सभी महान शास्त्र आपका स्वरूप बतानेवाले हैं।

हे भगवन् ! आप अत्यन्त उपादेय महान तत्त्व हो। आप तीन लोक के महामंगलस्वरूप परम पदार्थ हो और तीन लोक में अनुपम हो, अद्वितीय हो और सर्वोत्तम हो, सबसे महान हो।

इसप्रकार जगत में जो कुछ भी अद्वितीय सर्वोत्तम है; वह सब कुछ एकमात्र आप ही हो।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

तिहुँ लोक शरण अघहर महान, भवि देत परमपद सुख निधान।
संसार महासागर अथाह, नित जन्म मरण धारा प्रवाह।।११।।
सो काल अनन्त दियो बिताय, तामें झकोर दुख रूप खाय।
मो दुखी देख उर दया आन, इम पार करो कर ग्रहण पान।।१२।।

पुण्य-पापरूप अघ का हरण करनेवाले तीन लोक में एकमात्र शरणभूत महान पदार्थ आप ही हो; भव्य जीवों को सुख का निधान परम पद सिद्धदशा आप ही देते हो। इस अथाह संसाररूप महासागर में जन्म-मरण धारप्रवाह रूप से धारण करते आ रहे अनन्त जीवों ने अनन्त काल बिता दिया है और उसमें अनन्त दु:ख पाये हैं, झकोरे खाते-खाते यहाँ-वहाँ चतुर्गति परिभ्रमण कर रहे हैं। उनमें मैं भी एक हूँ। हे सिद्ध भगवन् ! दुखी देखकर मुझ दुखिया पर हृदय में दयाभाव लाकर मुझे इस संसार सागर से हाथ पकड़कर पार कर दो, पार उतार दो।

जिसप्रकार जगत में लोग अबोध बालक को हाथ पकड़ कर नदी-नाले पार कराते हैं; उसीप्रकार हे भगवन् ! मुझ अबोध बालक का हाथ पकड़कर इस संसार सागर से पार करा दो।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

तुम ही हो इस पुरुषार्थ जोग, अरु है अशक्त करि विषय रोग।
सुर नर पशु दास कहें अनन्त, इनमें से भी इक जान 'सन्त'।।१३।।

हे सिद्ध भगवन् ! इस महान पुरुषार्थ करने के योग्य एकमात्र आप ही हो। तात्पर्य यह है कि मेरा कल्याण तो हे भगवन् ! आपके द्वारा ही संभव है; क्योंकि जगत के अन्य देवी-देवता तो स्वयं ही विषयरोग से ग्रस्त हैं, अत: अशक्त हैं। वे क्या कर सकते हैं ?

संत कवि कहते हैं कि हे भगवन् ! देवता, मनुष्य और पशुओं में आपके दास तो अनंत जीव हैं; उनमें ही इस संत को भी आप अपना दास ही समझिये।

कृपा कर मेरा उद्धार आप अवश्य कर दें।

अगला छन्द इसप्रकार है –

(घत्ता कवित्त)

जय विघन जलधि जल हनन पवन बल सकल पाप मल जारन हो।
जय मोह उपल हन वज्र असल दुख अनिल ताप जल कारन हो।।
ज्यूं पंगु चढ़ै गिर, गूंग भरे सुर, अभुज सिन्धु तर कष्ट भरै।
त्यों तुम थुति काम महा लज ठाम, सु अंत 'संत' परणाम करै।।

हे भगवन् ! आप विघ्नरूपी सागर के जल का हनन करनेवाले पवन हो; यह तो सारी दुनिया जानती है कि पवन पानी को उड़ा देता है और वह पवन अग्नि को उत्तेजित कर प्रज्वलित कर देता है। उस पवन के बल से आप सम्पूर्ण पापरूपी मल को जलानेवाले अनिल हो।

आप मोहरूपी पत्थर को तोड़नेवाले वज्र हो, असली दुखरूपी अग्नि के ताप को मेंटने के कारणरूप जल हो। आपकी जय हो, जय हो।

जल अग्नि को बुझा देता है, अग्नि के संताप को कम कर देता है। यह भी सर्वविदित तथ्य है।

हे भगवन् ! आपकी भक्ति का काम मेरे लिए वैसा ही है; जैसा कि लंगड़ा व्यक्ति पर्वत पर चढ़ने का प्रयास करे, गूंगा व्यक्ति स्वर भरे और अभुज माने भुजाओं से रहित व्यक्ति अर्थात् लूला व्यक्ति समुद्र को तैरकर पार करने का कष्ट उठाये। उसीप्रकार मेरे लिए आपकी स्तुति करने का काम महा लज्जा का स्थान है। अत: अन्त में यह संत कवि आपको प्रणाम करता है।

इसके बाद आठवीं पूजन की जयमाला के अन्त में एक दोहा दिया गया है; जो इसप्रकार है –

(दोहा)

तीन लोक चूड़ामणि, सदा रहो जयवन्त।
विघ्नहरण मंगलकरन, तुम्हैं नमें नित 'संत'।।१।।

हे तीन लोक के चूड़ामणि सिद्ध भगवन् ! आप सदा जयवंत रहें। आप विघ्नों का हरण करनेवाले और मंगल करनेवाले हैं। यह संत कवि या संतजन आपको सदा नमस्कार करते हैं।

सिर पर बालों का चूड़ा बनाकर उसे सजाने के लिए बेशकीमती मणि लगाये जाते हैं। तीन लोक के सर्वोच्च शिखर पर सिद्धशिला का चूड़ा है और सिद्ध भगवान उस सिद्धशिलारूपी चूड़ा में लगे मणि हैं।

इसप्रकार सिद्ध भगवान तीन लोक के चूड़ामणि हैं, सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हैं।

यद्यपि सिद्ध भगवान किसी का कुछ नहीं करते; तथापि उनका स्मरण करनेवालों के विघ्न समाप्त हो जाते हैं और उनका मंगल स्वत: ही हो जाता है। इसकारण उन्हें विघ्नहरण और मंगलकरण कहते हैं।

इस सिद्धचक्र मण्डल विधान का समापन करते हुए सर्वान्त में दो अडिल्ल छन्द दिये गये हैं।

उनमें से पहला छन्द इसप्रकार है –

(अडिल्ल)

पूरण मंगलरूप महा यह पाठ है,
सरस सुरुचि सुखकार भक्ति को ठाठ है।
शब्द–अर्थ में चूक होय तो हो कहीं,
थुतिवाचक सब शब्द–अर्थ यामें सही।।१।।

भक्ति का है ठाठ जिसमें, ऐसा यह महा मंगलस्वरूप सरस, सुरुचि पूर्ण और सुख करनेवाला यह सिद्धचक्र महामण्डल विधान पूर्ण हो गया है। इसमें कहीं शब्दों की या अर्थों संबंधी कोई चूक हो गई हो तो भी कोई बात नहीं है; क्योंकि इसमें अन्तत: सभी शब्द और अर्थ स्तुति वाचक ही तो हैं।

कवि का कहना यह है कि इस सम्पूर्ण सिद्धचक्र विधान में जो शब्द लिखे गये हैं; वे सभी भगवान की स्तुति करनेवाले हैं और जो भाव प्रस्तुत किया गया है, वह भी स्तुति करनेरूप है। **यदि शब्द और अर्थ में कहीं थोड़ा–बहुत स्खलन हो गया हो तो इससे क्या फरक पड़ता है; क्योंकि हमारी भावना तो भगवान की स्तुति करना ही रहा है।**

दूसरा अडिल्ल छन्द इसप्रकार है –

(अडिल्ल)

जिनगुणकरण आरंभ हास्य को धाम है,
वायस को नहिं सिंधु उतीरण काम है।
पै भक्तनि की रीति सनातन है यही,
क्षमा करो भगवंत शांति पूरणमही।।२।।

सच्ची बात तो यह है कि जिसप्रकार महान विस्तारवाले गहरे सागर को पार करना बायस (कौआ–कागला) का काम नहीं है; उसीप्रकार हमारे द्वारा सिद्ध भगवान के गुणों का वर्णन आरंभ करना ही हास्यापद है, हास्य का स्थान है। फिर भी भक्तों की यही सनातन रीति रही है कि वे जैसी भी टूटी–फूटी भक्ति बन पड़ती हैं, करते अवश्य हैं। हमने भी उसी रीति का निर्वाह किया है। हे भगवन् ! क्षमा करें और सम्पूर्ण पृथ्वी में शान्ति की स्थापना हो।

हे भगवन् ! हम आपकी स्तुति करने में सफल हुए हैं या नहीं; इससे क्या फरक पड़ता है; हमने तो अपनी शक्ति की सीमा में कोई कसर नहीं छोड़ी; फिर जो हुआ, सो हुआ। अन्त में तो यह समझ लीजिए कि हमने तो भक्तों की सनातन रीति का ही निर्वाह किया है।

अन्त में हम तो यही चाहते हैं कि पृथ्वी लोक में पूर्णत: शान्ति का वातावरण रहे। जो कुछ भी कमी रह गई हो, तदर्थ हम क्षमाप्रार्थी हैं। ●

17 जुलाई 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

सोनगढ आज तीर्थधाम बन गया है। जहाँ-जहाँ सन्तों के पग पड़ते हैं, वह स्थान तीर्थधाम बन जाते हैं। सोनगढ क्यों न तीर्थधाम बने ? वहाँ तो आध्यात्मिक सत्पुरुष चालीस वर्ष से आत्म-साधना कर रहे हैं। आत्मसाधना और आत्माराधना का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

आज ऐसा कौन जैन है जो गिरनार और शत्रुंजय (पालीताना) गया हो और सोनगढ न गया हो तथा वहाँ पर पहुँचकर भव्य मानस्तंभ, विशाल जिन मन्दिर, सुन्दर समवशरण मंदिर एवं नवनिर्मित अद्वितीय परमागम मंदिर के दर्शन कर कृतार्थ न हुआ हो; जिसने शहरी कोलाहल से दूर, शान्त और निर्जन इस प्रान्त में आत्मा के नांद की गूंज न सुनी हो एवं रंग-राग और भेद से भिन्न आत्मा की बात जिसके कान में न पड़ी हो।

आज सोनगढ, समयसार और कानजीस्वामी पर्यायवाची हो गये हैं। सोनगढ में कुन्दकुन्दाचार्य के पंच परमागमों को परमागम मंदिर के संगमरमर के पाटियों पर उत्कीर्ण करा दिया गया है। सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य का इससे बड़ा स्मारक और क्या होगा ? पर कानजी स्वामी तो कुन्दकुन्द और उनके समयसार के जीवन्त स्मारक हैं। क्यों न हों ? समयसार ने उनके जीवन को जो बदल डाला है।

समयसार पाकर उन्होंने क्या नहीं पाया, क्या नहीं छोड़ा ? सर्वस्व पाया और सर्वस्व छोड़ा। श्रीमद् रायचन्द्र ने समयसार लाकर देने को खोवा भर मुद्रायें दी थीं, पर कानजी स्वामी ने तो उसके लिये परम्परागत धार्मिक सम्प्रदाय ही नहीं; उसका गुरुत्व, गौरवपूर्ण जीवन, यश -यहाँ तक कि प्राणों तक का मोह भी छोड़ा।

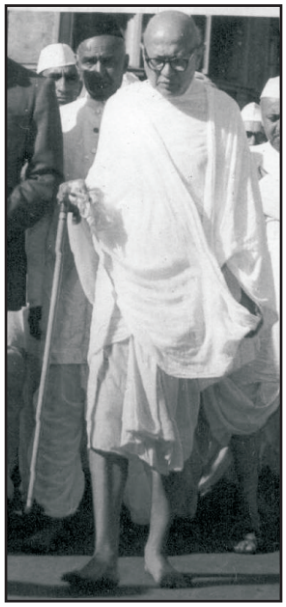

वे प्राणों की बाजी लगाकर, प्राणों की कीमत पर दिगम्बर जैन हुये हैं। दिगम्बरों ने उन्हें क्या दिया ? यदि दिगम्बरों ने उन्हें समयसार दिया, मोक्षमार्गप्रकाशक दिया तो उन्होंने दिगम्बरों को समयसार का सार और मोक्षमार्गप्रकाशक का मर्म दिया है। यदि उन्हें दिगम्बरों से एक समयसार मिला, एक मोक्षमार्गप्रकाशक मिला तो उन्होंने समयसार और मोक्षमार्गप्रकाशक दिगम्बरों के घर-घर तक पहुँचा दिया है।

कौन जानता था कि काठियावाड़ के छोटे से ग्राम उमराला में आज से 87 वर्ष पूर्व वि. सं. 1947 की वैसाख सुदी 2 रविवार के दिन जन्मा बालक कहान इतना महान होगा।

(क्रमशः)

बाल शिक्षण शिविर संपन्न

अशोकनगर (म.प्र.) : यहाँ महावीर कॉलोनी स्थित श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर में वात्सल्य प्रभावना मण्डल के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर दिनांक 15 से 22 जून तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय से पण्डित हर्षितजी शास्त्री व पण्डित चर्चितजी शास्त्री, आचार्य अकलंकदेव सिद्धांत महाविद्यालय ध्रुवधाम से पण्डित संजयजी शास्त्री व पण्डित अखलेशजी शास्त्री तथा अनेक स्थानीय विद्वानों की कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

इस शिविर में गुणस्थान विवेचन, इष्टोपदेश, बालबोध पाठमाला भाग 1-2-3, लघुजैन सिद्धांत प्रवेशिका आदि विषयों की कक्षाओं का लगभग 150 बच्चों व साधर्मियों ने लाभ लिया।

संपूर्ण शिविर का संचालन व निर्देशन श्री मयंक कुमार जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा किया गया।

बाल शिक्षण शिविर संपन्न

बण्डा-सागर (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान एवं मुमुक्षु मण्डल पिड़ावा द्वारा दिनांक 25 मई से 2 जून तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बण्डा के अनेक बालकों ने प्रवचन व कक्षाओं के माध्यम से जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

शिविर का संचालन पण्डित सौरभजी शास्त्री भिण्ड द्वारा किया गया।

शोक समाचार

दादर-मुम्बई निवासी श्री रजनीकान्त छोटालाल शाह का दिनांक 1 जुलाई को 81 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127